MANOHAR PARRIKAR
idsa
MANOHAR PARRIKAR INSTITUTE FOR DEFENCE STUDIES AND ANALYSES
मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान

MP-IDSA
Issue Brief

पाकिस्तान में इसाई अल्पसंख्यकों की बढती मुश्किलें: जरांवाला हमले के विशेष सन्दर्भ में

आशीष शुक्ल

अगस्त 25, 2023

Summary

पंजाब प्रान्त के जरांवाला में इस्लामी चरमपंथियों की भीड़ द्वारा किए गए हमले के तात्कालिक कारण वहाँ तथाकथित रूप से हुई कुरान के अपमान में ढूँढा जा सकता है, लेकिन जिस तरह से हमलावरों ने इसाई समुदाय के लोगों के घरों और पूजा–स्थलों में लूट–पाट व आगजनी की, वह पाकिस्तान में बढ़ती धार्मिक कट्टरता की ओर संकेत करती है| इसाई अल्पसंख्यकों के विरुद्ध हुई इस घटना की पाकिस्तान में चौतरफा निंदा तो की जा रही है, लेकिन वहाँ के लोग घटना से जुड़े वाजिब सवालों को उठाने से कतरा रहे हैं| आधिकारिक और गैर–आधिकारिक हलकों में इसे भारत समेत सम्पूर्ण दक्षिण एशियाई क्षेत्र में होने वाली सामान्य परिघटना बताकर पाकिस्तान को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर हो रही उसकी किरकिरी से बचाने का भरसक प्रयास किया जा रहा है|

पाकिस्तान में हिन्दू और इसाई समुदायों की बराबर-बराबर आबादी है| वर्ष 2017 में हुई जनगणना के अनुसार हिन्दुओं की तरह ही इसाई समुदाय की आबादी भी पाकिस्तान की कुल आबादी का 1.6% है|[1] पिछले लगभग साढ़े सात दशकों में पाकिस्तानी इसाई समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई खास परिवर्तन नहीं आया है| अलबत्ता इनकी स्थिति दिनों-दिन बदतर होती जा रही है| क़ानून और व्यवस्था के लिए जिम्मेदार संस्थान अल्पसंख्यकों के अधिकारों की सुरक्षा करने के बजाए, अक्सर उन पर हो रही ज्यादतियों के दौरान या तो तमाशबीन बने रहते हैं, या फिर खुद उसका हिस्सा होते हैं| पिछले वर्ष 17 सितम्बर को पंजाब प्रान्त के जफरवाली गाँव से पुलिस ने बशीर मसीह को चोरी के जुर्म में गिरफ्तार किया जिसके कुछ ही घंटों बाद उसकी लाश एक नजदीकी अस्पताल में लावारिसों की श्रेणी में रखी हुई मिली|[2] इसी तरह 16 मार्च 2022 को फेडरल इन्वेस्टीगेशन एजेंसी (Federal Investigation Agency) की अपराध शाखा के अधिकारियों ने पाकिस्तानी रेलवे के एक कर्मचारी फैंसन शाहिद को तौहीन-ए-रिसालत (Blasphemy), जिसके अंतर्गत पैगम्बर मुहम्मद और कुरान के अपमान को शामिल किया जाता है, के आरोप में गिरफ्तार किया और पीट-पीटकर उससे अपराध स्वीकार कराया गया|[3]

पाकिस्तान में वर्ष 2022 में अधिकारियों द्वारा तौहीन-ए-रिसालत (Blasphemy) या धर्म आधारित अपराधों में कुल 52 लोगों को आरोपित किया गया था जिनमें से दो लोगों का सम्बन्ध इसाई समुदाय से था|[4] पंजाब प्रान्त के लाहौर में स्थित सेंटर फॉर सोशल जस्टिस (Centre for Social Justice) की फरवरी 2022 में आई रिपोर्ट "ह्यूमन राइट्स ऑब्जर्वर 2022" (Human Rights Observer 2022) के अनुसार वर्ष 1987 से 2021 के बीच 1,949 लोगों के खिलाफ तौहीन-ए-रिसालत (Blasphemy) के मामले दर्ज किए गए थे जिनमें अहमदिया (32.99%), इसाई समुदाय (14.42%), एवं हिन्दू (2.15%) शामिल थे|[5] इन आरोपियों में कम से कम 84 लोगों की मजहबी भीड़ ने गैर-न्यायिक तरीके से हत्या कर दी जिनमें 23 लोग इसाई समुदाय के थे|[6]

---

[1] **"**2022 Report on International Religious Freedom: Pakistan**"**, Department of State, Washington D.C., 2023, p. 4. The detailed data of recently conducted 2023 digital census is yet to be made public.

[2] Ibid., p. 11.

[3] Ibid., p. 12.

[4] Ibid., p. 13.

[5] **"Human Rights Observer 2022: A Factsheet on the Rights of Religious Minorities in Pakistan"**, Centre for Social Justice, Lahore, February 2022, p. 17.

[6] Ibid., p. 18.

जरांवाला घटना

जरांवाला, पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के फैसलाबाद जिले के अंतर्गत एक क़स्बा है जिसकी आबादी करीब 1.5 लाख है जिनमें से लगभग 2% इसाई समुदाय के लोग हैं| गौरतलब है कि बीसवीं शताब्दी में भारत की आजादी की लड़ाई के दौरान जरांवाला भारतीय राष्ट्रवादियों का गढ़ हुआ करता था| इसी जरांवाला के पास मशहूर क्रांतिकारी एवं भारत की आजादी के महानायकों में एक सरदार भगत सिंह का जन्म हुआ था| भगत सिंह ने वर्ष 1947 के भारत-विभाजन के सन्दर्भ में कहा था कि अगर यह क्षेत्र मजहब के नाम पर विभाजित हुआ तो नफरत की इस आग को बुझाते-बुझाते आने वाली नस्लों कि कमर टूट जाएगी| भगत सिंह की यह बात अब सही साबित हो रही है| पिछले 16 अगस्त को इसी जरांवाला कस्बे में मुसलमानों की एक हिंसक भीड़ ने वहाँ स्थित पाँच महत्वपूर्ण चर्चों (इसाई पूजास्थलों) को जला दिया| इसके अतिरिक्त सैकड़ों की तादात में शामिल मुस्लिम चरमपंथियों की इस हिंसक भीड़ ने नजदीक के मोहल्ले में रह रहे इसाई समुदाय के घरों को निशाना बनाया, वहाँ लूट-पाट की और उन्हें आग के हवाले कर दिया| यद्यपि उस क्षेत्र में दबदबा रखने वाले इस्लामिक राजनीतिक दल तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तान (टी.एल.पी.) ने इस घटना में शामिल होने से इंकार किया है, लेकिन बहुत सी मीडिया रिपोर्ट्स ने टी.एल.पी. समर्थकों के उस हिंसक भीड़ में शामिल होने और घटना को अंजाम देने की पुष्टि की है|[7] हामिद मीर ने 'कैपिटल टॉक' के 17 अगस्त के अपने कार्यक्रम के दौरान यह स्पष्ट किया कि इस घटना में कुल 21 चर्चों और 312 घरों को लूटा और जलाया गया था|

जरांवाला में मामले का तात्कालिक कारण इसाई समुदाय के दो लोगों द्वारा पवित्र कुरान के पन्नों को फाड़ा जाना बताया जाता है| जैसे ही इस बात की भनक मुस्लिम चरमपंथियों के कानों तक पहुँची, इसके विरोध में उनका जमावड़ा होने लगा| जल्द ही टी.एल.पी. के सदस्यों के इस भीड़ में शामिल होने से स्थिति विस्फोटक हो गयी क्योंकि इन लोगों ने मस्जिदों से न केवल इसाई समुदाय के विरुद्ध घोषणाएं की, बल्कि लोगों को घटना वाली जगह पर चलने के लिए उकसाया भी|[8] इसका परिणाम यह हुआ कि जल्द ही लोगों ने आरोपियों के घर को आग के हवाले कर दिया और बेकाबू हिंसक भीड़ ने आस-पास के चर्चों और इसाई समुदाय के घरों को निशाना बनाना शुरू कर दिया| गनीमत रही कि इस घटना में किसी की मौत नहीं हुई क्योंकि मामले की गंभीरता को समझते हुए इसाई समुदाय के लोगों ने अपनी जान बचाने के लिए अपने घरों और सामानों को छोड़कर दूर चले गए थे| इस दौरान सबसे हैरतअंगेज बात यह थी

[7] Derek Cai and George Wright, **"Pakistan: Mob Burns Churches Over Blasphemy Claims"**, *BBC News*, 17 August 2023.

[8] Asif Chaudhry and Tariq Saeed, **"5 Churches, Many Homes Ransacked in Faisalabad's Jaranwala"**, *The Dawn,* 17 August 2023.

कि जिन संस्थानों पर क़ानून व्यवस्था की जिम्मेदारी थी, वह पूरी तरह निष्क्रिय दिखे जबकि स्थानीय प्रशासन चरमपंथियों से समझौते करने के लिए प्रयासरत रहा|[9]

इस घटना की पुरजोर निंदा करते हुए पाकिस्तान के अंग्रेजी अख़बार 'द डॉन' ने अपने संपादकीय में स्पष्ट रूप से लिखा है कि न तो यह पाकिस्तान के इतिहास की पहली घटना थी, जहाँ धार्मिक भावनाओं का दोहन निहित स्वार्थ के लिए किया गया, और न ही यह आखिरी घटना होगी क्योंकि पाकिस्तान में बड़ी संख्या में लोगों ने तौहीन-ए-रिसालत (Blasphemy) के आरोपों के कारण भीड़ की हिंसा झेली है|[10] हालाँकि, साथ ही साथ पाकिस्तान के आधिकारिक और गैर-आधिकारक हलकों में भारत का हवाला देते हुए इसे एक क्षेत्रीय परिघटना बताकर दरकिनार करने की कोशिश में भी यह अख़बार शामिल होता हुआ प्रतीत हुआ|[11]

बढ़ती धार्मिक कट्टरता

यद्यपि जरांवाला हिंसा का तात्कालिक कारण पवित्र कुरान के पन्नो का फाड़ा जाना माना जाता है, वहाँ मुस्लिम चरमपंथियों द्वारा की गयी लूट-पाट व आगजनी पाकिस्तान में बढ़ती घार्मिक कट्टरता की ओर इशारा करती है| इस धार्मिक कट्टरता एवं इसको प्राप्त संरक्षण, विशेषकर सुरक्षा संस्थानों द्वारा, के कारण पाकिस्तान में अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ हो रही हिंसा ने अपनी जड़ें गहरी जमा ली है और अल्पसंख्यकों को द्वितीय श्रेणी का नागरिक बना दिया है| पाकिस्तान के मानवाधिकार आयोग की हालिया रिपोर्ट में यह स्पष्टतः कहा गया है कि पाकिस्तान अपने अल्पसंख्यकों को द्वितीय श्रेणी का नागरिक समझता है|[12] यहाँ धार्मिक अल्पसंख्यकों को नियमित रूप से तरह-तरह की धर्म-आधारित हिंसा, सामाजिक एवं क़ानूनी भेद-भाव से दो-चार होना पड़ता है जिसके लिए राज्य तथा गैर-राज्य कर्ता दोनों जिम्मेदार हैं| पाकिस्तान में धर्म का मुद्दा अभी भी पूरी तरह से सुलझ नहीं पाया है और यह उसकी राजनीति के साथ-साथ, विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों और अल्पसंख्यकों के अधिकारों को प्रभावित करता है| ऐतिहासिक, सामाजिक, एवं राजनितिक कारकों की एक बेहद जटिल अन्योन्यक्रिया के कारण इस्लाम और इस्लामिक विचारधारा पाकिस्तान में प्रबल वाद-विवाद के केंद्र में बनी हुई है|

[9] Umair Javed, **"Who Set Fire to Jaranwala?"**, *The Dawn*, 21 August 2023.

[10] **"Inner Demons"**, *The Dawn*, 21 August 2023.

[11] Ibid.

[12] **"A Breach of Faith: Freedom of Religion or Belief in 2021-22"**, Human Rights Commission of Pakistan, Lahore, 2023, p. 1.

ऐसा नहीं है कि यहाँ के धार्मिक अल्पसंख्यक इस्लाम को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते या उसका अपमान करते हैं| अभी हाल ही में जब नेशनल असेम्बली भंग हो रही थी तो अल्पसंखयक समुदाय का नेतृत्व कर रहे एक सदस्य रमेश कुमार ने नेशनल असेम्बली में बहुत भावुक भाषण दिया था और इस भेद-भाव का खात्मा करने की बात कही थी| उन्होंने अपने वक्तव्य के दौरान पैगम्बर मुहम्मद (नबी) की शान में एक शेर भी पढ़ा था जो कुछ इस तरह है: "मेरे सीने की धड़कन है, मेरी आँखों के तारे हैं| सहारा बेसहारों का, खुदा के वो दुलारे हैं| हमें समझकर फ़कत अपना, हमें तक्सीम (विभाजित) ना करना| नबी (पैगम्बर मुहम्मद) जितने तुम्हारे हैं, नबी (पैगम्बर मुहम्मद) उतने हमारे हैं|"

यहाँ यह बात भी महत्वपूर्ण है कि स्वयं इस्लाम भी इस तरह की घटनाओं इजाजत नहीं देता है| हामिद मीर और सलीम साफी, जो पाकिस्तान के जियो टेलिविज़न पर 'कैपिटल टॉक' और 'जिरगा विथ सलीम साफी' शीर्षक से क्रमशः कार्यक्रम करते हैं, ने एक हदीस का हवाला देते हुए कहा कि पैगम्बर मुहम्मद साहब खुद कहते हैं कि "ख़बरदार! जिस किसी ने किसी अकलियती फर्द पर जुल्म किया या उसका हक़ ग़ज़ब किया या उसकी इस्तेहात से ज्यादा तकलीफ़ दी या उसकी रजा के बगैर उसकी कोई चीज़ ली तो रोजे क़यामत के वक्त मैं उसकी तरफ से उस मुसलमान से लड़ूँगा|"

इन सब बातों के होते हुए भी पाकिस्तानी समाज में आंतरिक टूट और बिखराव इस कदर बढ़ रहा है कि जरांवाला जैसी घटनाएँ अब न तो असामान्य हैं और न ही यह वहाँ के अधिकांश लोगों की अंतरात्मा को झंझोड़ती हैं| इंटरनेशनल क्राइसिस ग्रुप (International Crisis Group) की 2022 की रिपोर्ट इस बात की पुष्टि करती है कि पाकिस्तान में साम्प्रदायिक दरार न केवल उसके लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी रही है बल्कि यह उसके राज्य के अस्तित्व के लिए एक भयानक खतरा बनकर उभरी है|[13] यू.एस. कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम (US Commission on International Religious Freedom) की वर्ष 2023 की हालिया रिपोर्ट में यह कहा गया है कि पाकिस्तान में इस्लामिक कट्टरता के प्रभाव ने वहाँ अल्पसंख्यकों के विरुद्ध हिंसा की स्थिति को बहुत भयावह कर दिया है तथा टी.एल.पी. जैसे संगठनों की लोकप्रियता में इजाफा किया है|[14] वर्ष 2017 से चर्चा में आई टी.एल.पी. का पाकिस्तान में हिंसा की कुछ बड़ी घटनाओं में निर्णायक योगदान रहा है| यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि वर्ष 2018 के चुनाव के ठीक पहले टी.एल.पी. ने तौहीन-ए-रिसालत (Blasphemy) को लेकर पूरे देश में हिंसक प्रदर्शन किया था|

[13] **"A New Era of Sectarian Violence in Pakistan"**, International Crisis Group Asia Report No. 327, Brussels, 5 September 2022, p. ii.

[14] **"**Annual Report of the U.S. Commission on International Religious Freedom**"**, U.S. Commission on International Religious Freedom, Washington D.C., p. 35.

अंतर्राष्ट्रीय अनुबंधों का उल्लंघन

पाकिस्तान में विवादित तौहीन-ए-रिसालत (Blasphemy) से सम्बंधित क़ानून को अक्सर अधिसंख्य मुस्लिम, अपने व्यक्तिगत विवादों में हावी रहने तथा अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए, अल्पसंख्यकों के खिलाफ एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं| तौहीन-ए-रिसालत (Blasphemy) के ज्यादातर आरोपियों को इस्लामी चरमपंथी भीड़ अपना निशाना बनाती है और उनकी जान ले लेती है| पाकिस्तानी मानवाधिकार आयोग की वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2021 में पाकिस्तान में तौहीन-ए-रिसालत (Blasphemy) के 585 मामले दर्ज किए गए थे जिनमें से ज्यादातर पंजाब प्रान्त से थे|[15] पाकिस्तान में तौहीन-ए-रिसालत (Blasphemy) को लेकर होने वाली हिंसा और इस्लामी दक्षिणपंथी राजनीति की मिलीभगत बिना किसी रूकावट के जारी है| धार्मिक आधार पर अल्पसंख्यकों के खिलाफ हो रही हिंसा को प्रभावी रूप से रोकने में विफल रहने के साथ ही पाकिस्तान ने बहुत से अंतर्राष्ट्रीय अनुबंधों का खुलेआम उल्लंघन किया है जिनमें प्रमुख रूप से युनिवर्सल डिक्लेरेशन ऑफ़ ह्युमन राइट्स (Universal Declaration of Human Rights), इंटरनेशनल कोवेनांट ऑन सिविल एंड पॉलिटिकल राइट्स (International Covenant on Civil and Political Rights) शामिल हैं जिनके अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति की धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार को मान्यता दी जाती है| यह अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध लोगों के विचार, अभिव्यक्ति, अंतःकरण और धार्मिक स्वतंत्रताओं को सुरक्षित रखने के महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं जिनका पालन करना सभी देशों की जिम्मेदारी है| लेकिन पाकिस्तान, जिसने इन अनुबंधों पर हस्ताक्षर भी किए हैं, का इस क्षेत्र में रिकार्ड बहुत ही दयनीय है|

संस्थानों की संलिप्तता

पाकिस्तान के राजनीतिक व सैन्य नेतृत्व ने एक लंबे समय से विभिन्न प्रकार के इस्लामी चरमपंथी संगठनों को निहित स्वार्थ के लिए प्रश्रय एवं संरक्षण प्रदान किया है| ऐसा करने के पीछे उनकी मंशा इन संगठनों को समय-समय पर 'एक रणनीतिक हथियार' के रूप में इस्तेमाल करने की रहती है| चाहे वह लश्कर-ए-तैयबा हो, हरकत-उल-मुजाहिदीन हो, लश्कर-ए-झांगवी हो, सिपह-ए-साहबा हो, या तहरीक-ए-लब्बैक हो इन सभी संगठनों को संरक्षण प्राप्त होता रहा है| इस तरह के संगठन अब पाकिस्तान में हिंसक गतिविधियों में लिप्त होकर तथा आतंकी गतिविधियों को अंजाम देकर पाकिस्तान में सामाजिक-

[15] **"State of Human Rights in 2022"**, Human Rights Commission of Pakistan, Lahore, 2023, p. 22.

राजनीतिक ताने-बाने में क्रांतिकारी परिवर्तन करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं| पाकिस्तान के सैन्य संस्थान एक ओर तो आधुनिक उदारवादी मूल्यों एवं परम्पराओं का पालन करने का दावा करते हैं, तो वहीं दूसरी तरफ विभिन्न इस्लामी चरमपंथी एवं आतंकवादी संगठनों को 'एक रणनीतिक हथियार' की तरह इस क्षेत्र, विशेषकर अफ़ग़ानिस्तान और भारत, में इस्तेमाल करते हैं| पाकिस्तान की इस तरह की अघोषित नीतियों का परिणाम यह हुआ है कि इन संगठनों ने देश के अन्दर उग्र मानसिकता वाले चरमपंथी लोगों की संख्या बढ़ा दी है| इससे पाकिस्तान के समक्ष एक बड़ी चुनौती उपस्थित हो गयी है जिसका उद्देश्य उसे एक तरह के वहाबी इस्लामी राज्य में बदलना है जहाँ शिया, अहमदिया, सूफी और अन्य धार्मिक अल्पसंख्यक इस चरमपंथ की आग में जलते रहें|

निष्कर्ष

जरांवाला की हालिया घटना की तह में जाने पर इस बात के पर्याप्त संकेत मिलते हैं कि पाकिस्तान पिछले साढ़े सात दशक के लंबे समय में भी खुद को एक प्रगतिशील इस्लामी दृष्टिकोण वाला आधुनिक उदारवादी राज्य बनाने में असफल रहा है| पाकिस्तान में राजनीतिक माहौल ऐसा हो चुका है कि शायद ही कोई राजनीतिक दल हो जो किसी न किसी रूप में इस्लाम का इस्तेमाल करते हुए समाज में वैधता प्राप्त करने का प्रयास न कर रहा हो| टी.एल.पी., जिसके कार्यकर्ता इस घटना में प्रत्यक्ष रूप से शामिल थे, तौहीन-ए-रिसालत (Blasphemy) के मुद्दे पर मुसलमानों को प्रभावी रूप से संगठित करती है| पाकिस्तान में टी.एल.पी. एक नयी अवधारणा है जिसने इस्लाम और कुरान को सुरक्षित करने के नाम पर लोगों की भावनाओं को भड़काया है| यद्यपि जरांवाला की घटना को पाकिस्तान में सभी तबके के लोगों ने निंदनीय बताया है तथा देश के सैन्य एवं राजनीतिक नेतृत्व ने उन बलवाइयों के खिलाफ कार्रवाई करने की बात कही है, लेकिन सत्य तो यह है कि इस तरह की घटनाएँ देश में अल्पसंख्यकों के प्रति व्याप्त गहरी शत्रुता की भावना और घृणा की ओर इशारा करती हैं| इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह पाकिस्तान के राजनीतिक एवं सैन्य संभ्रांत तबके और धार्मिक दक्षिणपंथी एवं चरमपंथी तबकों की मिलीभगत से पाकिस्तान के इस्लामीकरण करने की वर्षों से चल रही प्रक्रिया का परिणाम है|

About the Author

Dr. Ashish Shukla is Associate Fellow at the Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses, New Delhi.

Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses is a non-partisan, autonomous body dedicated to objective research and policy relevant studies on all aspects of defence and security. Its mission is to promote national and international security through the generation and dissemination of knowledge on defence and security-related issues.

Disclaimer: Views expressed in Manohar Parrikar IDSA's publications and on its website are those of the authors and do not necessarily reflect the views of the Manohar Parrikar IDSA or the Government of India.

© Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses (MP-IDSA) 2023

Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses
1, Development Enclave, Rao Tula Ram Marg
New Delhi 110 010 India
T +91-11-2671 7983 F +91-11-2615 4191
www.idsa.in
Twitter @IDSAIndia
www.facebook.com/ManoharParrikarInstituteforDefenceStudiesAnalyses